International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: (RJIF 5.22)
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue1; January 2016; Page No. 25-27

भारतवर्ष में धर्म सम्बन्धी मान्यताएं एवं उनकी विविद्यता

डॉ0 जयराम त्रिपाठी

सहायक प्रोफेसर, भारत रत्न, बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय, फतेहपुर

सारांश
भारत देश में सभी प्रकार के धर्म मिलते हैं। वास्तव में यह धर्मो का ही देश है। भारत में मुख्यतः निम्नलिखित धर्म हैं – हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, बोद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म, पारसी धर्म, ईसाई धर्म। हिन्दी भाषी प्रदेशों में सर्व धर्मो वाले व्यक्ति रहते है और वे हिन्दी भाषा का बोल–चाल में प्रयोग करते हैं। भिन्नता इतनी है कि हिन्दू धर्म को छोड़ अन्य धर्म वाले अपनी धार्मिक भाषा में गीत गाते हैं जैसे मुसलमान मर्सिया शोकगीत उर्दू भाषा में गाते हैं अतएव हिन्दी वोलियों के लोकगीत हिन्दू धर्म वाले ही गाते हैं। हिन्दू धर्म से ही निकलकर बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिक्ख धर्म की उत्पत्ति हुई है।

मूल शब्द– भारत, धर्म एवं सिक्ख धर्म, पारसी धर्म

प्रस्तावना

हिन्दू धर्म भी कई प्राचीन धर्मो से मिलकर बना है दृष्टांतार्थ –आर्य धर्म, ब्राम्हण धर्म, वैष्णव धर्म शैव धर्म मानव धर्म प्राकृतिक धर्म। आज उपर्युक्त विभिन्न धर्म अलग नही है बल्कि सिमट कर हिन्दू धर्म में घुल–मिल गए है और हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दू धर्म की ज्यादा मान्यता है। हिन्दू लोग हिन्दू धर्म की समाजिक मान्यताये को मानकर चलते हैं। वे हिन्दू धर्म के अन्तर्गत आने वाले समस्त देवी–देवताओं की पूजा आराधना करते है। इसके अतिरिक्त अनेक हिन्दू लोग मुस्लिम पीर, फकीरों की भी प्रार्थना करते हैं। पीरों की मजारों पर जाकर पुष्पार्ण करके दुआ मॉगते हैं तथा हिन्दी बोलियों में गीत, प्रार्थना गाते है। अतंतः हिन्दू धर्म विशाल है जिसमें प्रकृति की सभी वस्तुएं पूज्य हैं क्यों न वह मजार हो या पत्थर या अन्य अदृश्य वस्तुएं।

हिन्दी धर्म में सर्व शक्तिशाली अदृश्य भगवान को महत्व दिया गया है। उसका रूप अन्य साकार भगवानों में सम्मिलित किया गया है। अतएव इसके लिए दो मत–साकार, निराकार मिलते है। दोनों के प्रति भरपूर काव्य भी रचे गये है। हिन्दुओं के ये ही आराध्य देव हैं। प्राचीन काल से हिन्दुओं ने अपने देवों को भगवान ही कहा है। अतएव आराध्य भगवान निम्नलिखित हैं :

> ब्रह्मण, विष्णु, शिव, इन्द्र, गणेश, हनुमान, राम, श्रीकृष्ण प्रभृति।

इसके अतिरिक्त कई देवियां हैं। जैसे सरस्वती, पार्वती, दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सीता, राधा, और संतोषी अत्यादि। इन देवी–देवताओं की भक्ति हिन्दू समाज के लोग सदैव करते आये है। इनकी आराधना सामाजिक मान्यता पर सुभाषित है। सर्वशक्तिमान देवता हनुमान की भक्ति तो सभी करते है। इसके अतिरिक्त गॉवों में अनेक स्थानीय देवी–देवता मान्य हैं। ग्रामीण जनता अपने पिछड़े पर के कारण सदैव प्राकृतिक शक्तियों की पूजा–आराधना करती चली आयी है। अतएव अदृश्य देवी–देवताओं की पूजा आराधना के लिए गॉवों के बाहर चौर बने होते है। इन स्थानीय देवताओं के अतिरिक्त जल देवता, पवन देवता, अग्नि देवता, अन्न देवता और पथ, वन देवता की पूजा भक्ति प्रचलित है। हिन्दुओं के धार्मिक धरातल पर देवी देवताओं की कमी नहीं है। अतएव विभिन्न जातियॉ अपने–अपने विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा भक्ति करती है। पूजा–भाक्ति में कोई रोक टोक नहीं। चाहे राम की पूजा करो चाहे कृष्ण की या शंकर भगवान की। बात एक ही है क्यों कि भगवान एक है, रूप अनेक हैं। इस तरह की समन्वित भावना हिन्दू समाज में है।

हिन्दू समाज के लोग ब्रह्मा की पूजा–उपासना करते हैं ब्रह्मा की पूजा के समय स्त्रियॉ गीत गाती हैं। कनउजी बोली का एक लोकगीत –

> सरिष्टी के रचैता उतारी आरती तुम्हारी।
> भॉति–भॉति के प्रानी बनाये करें बलिहारी।।
> सेने के गड़वा मा पानी, गंगा से भरि लायी।
> चंदन को घिसि–घिसि कनक कटोरी मा रखि लायी।।
> सेहत है तुम्हारे चेरनन मा फूलन की थारी।
> चलत है यह सारी धरती तुम्हारी बन बूते
> रहत हैयह सारी जनता तुम्हारे बन बूत।
> चमकते है जग मा सूरज चंदा की उजियारी।
> करो कल्यान है बरहम बाबा हमारो आज के दिना
> मेटो दुख सारो, कहॉ है सुख तुम्हारें बिना।
> महकत है आज हमारे घर शीतल बयारी।

ब्रह्मा चतुरानन हैं। उनका जन्म अडे से हुआ है और स्वयं सृष्टिकर्ता हैं। उनकी प्रजापति कहा गया है। वे वेदों में पूज्य है। इसलिए उनको भगवान कहा गया है। 'ब्रह्मा के चार मुख हैं जिससे उनका नाम चतुरानन भी पड़ा है। उनकी चार भुजाएं हैं, जिनमें वे दण्ड अथवा अरणी, रूद्राक्ष, धनुष्य कलश और वेद धारण करते है। उनक वाहन हंस है। अपने इसी रूप में भारतीय वास्तुकला में ब्रह्मा मूर्त हुए हैं। धीरे–धीरे उनकी मूर्ति की पूजा विष्णु का महत्व बढ़ने के अनुपात में ही कम होती गयी, जिससे ब्रह्मा के मंदिरों की संख्या आज नितान्त न्यून है।

ब्रह्मा के पश्चात् विष्णु भगवान का वितीय स्थान है। ऋग्वेद में इन्हें सूर्य माना गया है। महाभारत और पुराणों में विष्णु प्रजापति है, सबका स्वामी। ब्रह्ण जैसे उसकी नाभि से उत्पन्न होता है, शिव भी उसके ललाअ से जन्म लेता है। सृजन, पालन और संहार तीनों स्थितियों का आदि बिन्दु विष्णु में ही है। साधुओं की रक्षा और दुष्टों के दमन के लिए वह बार–बार अवतार लेता है। उसके प्रधान अवतार दस है। और गौणों को मिलाकर उसके अवतार की संख्या चौबीस है। इनमें राम और कृष्ण प्रधान है। विष्णु का अपना लोक

है, विष्णु लोक अथवा बैकुण्ठ। उसका वाहन गरूड़ है, शस्त्र विशेषतः चक्र है। वैसे वह चतुर्भुज हो जो संख, चक्र, गदा और पदम् धारण करता है। उसकी पंत्नी धन सम्पत्ति तथा सौभाग्य की स्वामिनी लक्ष्मी अथवा श्री है। विष्णु की महिमा पुराणों में अधिक मिलती हैं विष्णु के प्रति लोकगीत न्यून मात्रा में है। लोकजन पूजा भी कम करते है। दृष्टान्तार्थ एक लोकगीत प्रस्तुत है –

भगवान बिसनू ने लियां नर सिंह को अवतार।
क्री देउतन कीरच्छा, अधम असुरन को मार।।
नाभी से निकारि सुंदर फूल कमल रचायी।
भीनी–भीनी महक से सारो जग महकायो।।
शंख, चक्र, गदा, पदुम धारे गरूड़ पर हैं सवार।
देवी लक्ष्मी जी जिनके चरन नहीं है पखार
दस रूप धारी जिनकी महिमा अपरमपार।
भगवान बिसनू नेलियो रामकृष्ण को अवतार।।

आज विष्णु की भक्ति कम क्यों हो गयी? मध्यकाल से ही निगुर्ण संतो ने सगुण देवताओं, भगवानों की अवहेलना की ओर जनता में एक नयी छाप पड़ी जिससे विष्णु की भक्ति के प्रति भावना शिथिल पड़ गयी। जयदेव विष्णु के अवतारों में विश्वास रखते थे, वेद, ब्राम्ह्ण आदि के प्रति श्रद्धा संत–परम्परा के लिए विजातीय हीं नहीं तिरस्करणीय वस्तु थी। दूसरी तरफ का कुभुशुपिड जिस उत्तर भारतीय निगुर्ण भक्ति परम्परा से सम्बद्ध वे उसमें विश्व के प्रति अगार्थ और एकान्त निष्ठा थी तथा विष्णु को वे कोई महत्व नहीं देते थे। कबीर आदि संतों की स्थिति ठीक ऐसी ही है। अंततः विष्णु भक्ति के लोग विष्णु की पूजा करते है। यंत्र–तंत्र लोकगीत भी प्रचलित हैं।

शंकर को भगवान और देवता दोनों रूपों में माना गया है। लोगों का कल्याण करने वाले महान देवता हैं सृष्टि संहारक भी है। दानी भी है। अतः लोकमानस में शंकर की पूजा, भक्ति अत्याधिक है। शिवालय अत्याधिक मिलते है ऋग्वेद में शिव का नाम नहीं आया है; पर रूद्र का एक बधन और बहुबचन दोनों रूपों में आया है। रूद्र के भयावह रूप से ही शिव का विकास हुआ जो वास्तव में आर्यो के देवता नहीं थे। उन्होंने लिंग रूप की अवमानना की है और लिंग पूजकों को शिव देवा कहकर कोसा है। धीरे–धीरे ऋग्वेद और आर्यो के रूद्र और द्रविडों के योगीरूप देवता मिलकर शिव हो गए और शीघ्र ही उनका लिंग पूजन भी शुरू हो गया।

शिवा शरीर पर भस्म लगाते हैं नन्दी (सॉड़) पर सवारी करते है। सर्प उनके आभूषण हैं जटाजूट पर चैद्रमा शोभायमान है और कपर्द में गंगा की धारा का प्रवाह दर्शनीय है। निवास बर्फ से ढक कैलाश है। इनको भूतेश्वर कहा जाता है। संसार के समस्त प्रणियों का स्वामी माना गया है। समाधि एवं तप से इनकी शक्ति बढ़ जाती है। शिवपुराण में इनकी महिमा का विस्तृत बखान है। तांड़व नृत्य से धरती को क्या देते है। देत्यों का संहार कर मानव कल्याण करते है। इस देवता के प्रति लोगों की भक्ति अत्याधिक है। अतः हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियों में काव्य मिलता है। अनेक लोकगीत प्रचलित से होती है। शिवभक्त भॉग का सेवन करके मनमस्त हो जाते है। श्रीरामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने शिव वन्दना की है।

गुरू पितु मातु महेस भवानी, प्रनवउ दीनबंधु दिन दानी।।
सेवक स्वामि सखा सिय पी के हित निरूपाधि दिन विधि तुलसी के।।
कलि बिलोकि जग हित हर गिरजा। सावर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा।।
अनमिल आखर अरथ न जाय। प्रगट प्रभाउ महेस प्रताप।।
सो उमेस मोहि पर अनुकूला। करिहिं कथा मुद मंगल मूला।।
सुमिरि सिवा पाइ पसाउ। बरनऊ रामचरित चित चाऊ।।
भनिति मौरि सिव कूपॉ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहूं सुराती।।
होइहहिं राय चरन अनुरागी। कहिहरि सुनिहंहि समुश्सिचता।।
सपनहु सायहु मोहि पर जौ हर गौरि पसाउ।
तो फुर होउ जो कहऊं सब भाषा भानिमि प्रभाऊं।।

महादेव शिव के प्रति एक अन्य भोजपुरी बोली में बंदना –

होरे नितिदिन आवेहे महादेव बन्दों असनान हेमा।
होरे सोनादह आवेहे महादेव बन्दों असनान हेमा।
होरे पॉच जटा केश हे महादेव जल में भासल हेमा।
होरे पॉच जटाकेश महादेव भेल कमल के फूल हेमा।
होरे तही में ओतार लेले पॉचो बहिन बिषहारी हेमा।
होरे रोज तो सौभार मे माता ले ले औतार हेमा।
होरे ल्बतो आएनेहे देवी गोरा हेमा।

शंकर को गॉजा भांग का सेवन करने वाला देवता माना गया है। यथा –

गौरा ने बो दयी भॉग, बुंदिया पड़ने लगीं।
गौरा ने बोई हरी–हरी मेंहदी, शंकर ने बोयी भंग,
बुंदिया पड़ने लगी।
गौरा ने गोड़ी हरी–हरी मेंहदी, शंकर ने गोड़ी भॉग,
बुंदिया पड़ने लगीं।
गौरा ने सींधी हरी–हरी मेंहदी, शंकर ने सींची भाग,
बुंदिया पड़ने लगीं।
गौरा ने तोड़ी हरी–हरी मेंहदी, शंकर ने तोड़ी भॉग,
बुदियां पड़ने लगीं।
गौरा ने रचाई हरी–हरी मेंहदी, शंकर ने घोटी भॉग,
बुंदियां पड़ने लगीं।

इस तरह शंकर आराध्य देवता हैं उनकी पूजा की जाती है। और उनके वरदान पान के लिए लोग व्रत, उपास भी करते हैं। विशेष अवसरों पर उनके प्रति लोकगीत गाये जाते हैं। इन्द्र को वर्षा करने वाला महान देवता माना गया है। ऐरावत पर आस्ट इन्द्र की मूर्ति द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व निर्मित भाजा गुहा में उकेरी हुयी पायी गयी है। सोमरत पान करने वाला यह देवता अप्सराओं से घिरा रहता था। इस देवता ने शची पैलामी को विवाह–पूर्व बलात्कार करके भोग लिया था गौतम ऋषि की धर्म पत्नी अहिल्या को भी छल से भोगा था। कुन्ती से भोग करके अर्जुन को जन्म दिया था यह देवता अत्याधिक छली माना गया है। ब्राह्मण का रूप धारण कर इसने कर्ण को छलकर कवच कुंडल मॉग लिये थे। ऋषियों का तप अपनी अप्सराओं द्वारा भंग करवा देता था। कृष्ण से इसका सदैव विरोध रहा। एक बार दुर्वासा ऋषि ने इसको फूॅलों की माला भेट स्वरूप दी तो इसने दुर्वासा को सम्मान नहीं दिया। रावण ने इसे पराजित कर दिया था। नारी भोग, पर–पत्नी हरण जैसे पतित कार्यो के कारण लोकजन ने इसके प्रति भक्ति कम दर्शायी है। फिर भी आर्यो ने इन्द्र प्रशस्ति में कई ग्रथों में गायी है।

ऋग्वेद का सबसे सबल देवता जिसके लिए इतने सूक्त कहे गये है जितने अग्नि को छोड़कर किसी अन्य देवता के लिए नहीं कहे गए

हैं। आगे चलकर जब विष्णु शिव, महावीर, बुद्ध और अन्य देवी–देवियों के उदय के कारण इन्द्र की पूजा बहुत कम हो गयी, यह देवताओं का राजा बना रहा और उसका विरूद ही देवराज बन गया। ऋग्वेद में वह शक्तिमान देवता है, पीताभ–अरूणम वर्ण का, जो रक्त वर्ण के दो अश्वों के रथ पर आरूढ होता है। वह आकाश का देवता है और मरूतों मेघों द्वारा जल वर्षाकर पृथ्वी को उर्वरा करता है।

अंततः इंद्र बज्रास्त्र द्वारा शत्रुओं, देत्यों का संहार करने वाला आर्यो का प्रमुख देवता है। सम्पूर्ण धरती पर वर्षा जल फैलाने वाले इस देवता की स्मृति वर्षा विहीनता के समय लोग अवश्य करते है। वर्षाकाल आषाढ़ महीने से माना गया है। यदि आषाढ़ में वर्षा का प्रारम्भ अच्दी तरह हो जाये तो कृषकों को अत्याधिक प्रसन्नता आ जाती है। खेतों में हल चलने लगते है। यदि पानी नहीं बरसता है तब समझा जाता है कि इंद्र देवता कुपित है। अतएव उनको मनाने के लिए लोकगीत गाये जाते हैं। गॉव में बच्चे पानी में लोटते–पोटते हैं। स्त्रियां ढोलक पर गीत गाती हैं। कनोउजी बोली का एक लोक गीत –

बरसो–बरवों हे इंद्र भगवान, भरि जॉइ ताल–तलैया।
तरसे सूखी धरती, एक बूंद नहिं पानी,
सूखि गए बिरवा, होई गयी हैरानी,
कैसे बिथा बताये राजा को रानी।
बरसो बरसो हे इंद्र भगवान, हुकारे मोरी गैसा।।
असाढ़ मास नहिं आयं, खाली है खेती?
पवन बहें जो, उड़ि उड़ि जात हेरेती,
बड़ी चिचिली धूप, कुछ दिखाई नहिं देती।
बरसो–बरसों हे इंद्र भगवान तीनों लोक के रमैया।

इंद्र देवता की पूजा भक्ति कि लए लोक क्षेत्रों या गावों में मंदिर नहीं मिलते है एक ही समय में कई भगवानों का होना भी एक कारण है ब्रह्मा विष्णु महेश इंद्र इत्यादि देवताओं के प्रति अनेक वाद खड़े हुए है और लोकमानव में शंकर की पूजा अधिक विस्तृत हुयी। अतएव इंद्र की पूजा–आराधना अत्याधिक न्यून है।

शिव और पार्वती के पुत्र गणेश को कल्याणकारी ज्ञानदाता एवं सम्पत्ति वर्द्धक देवता माना जाता है। व्यात के निमन्त्र पर इन्होंने महाभारत पुस्तक लिखी ऐसी मान्यता है कि व्यास श्लोक बोलते जाते वे और ये लिखिते जाते थे। ये गणों के नायक था। नौ गण ये जो कैलाश पर्वत पर निवास करते थे। ये नौ गण आदित्य, विश्वदेवा, वसु, तुषित, आभार वर–अनिल, महाराजिक, साध्य और रूद्र थे। गणेश नाटे कद के पीले वर्ण के चार हाथों और बड़े उदार वाले, गज के मस्तक वाले और एक दन्त वाले माने जाते हैं। उनके हाथ में शंख होता है, दूसरे में चक्र तीसरे में गदा या अंकुश और चौथे में कमल। अकसर उनके चरणों में उनका वाहन चूहा होता है और उनके बार तो वे अपने उस वाहन पर आसीन भी होते हैं। उन्हें लड्डू बहुत भाते हैं जिसके लड्डुओं की थाली का भी उनकी मूर्ति के साथ प्रायः निरूपण हुआ है। गणेश चतुर्थो का व्रत प्रसिद्ध है। भाद्रप्रद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को यह व्रत किया जाता है। व्रत के दिन गणेश की पूजा इस गीत से होती है –

गताधियः गौरी सुमन अधनाशक एक दन्त।
इशपुत्र, सवीसिइप्रद, विनायकः भगवन्त।।
कुमार गुरू, इभ्वक्ताय, मूशक–वाहन सन्त।
करहु कुपा मुझदास पर, पाय के भर जनन्त।।

राम दशरथ के पुत्र थे उनकी माता कौशल्या थीं। इनको व्रेता युग में विष्णु के सातवें अवतार के रूप में मानकर भगवान कहा गया है। इन्होंने लंकेश रावण का बध किया था तथा अपनी पत्नी सीता को लंका से लाकर अयोध्या को चले आये थे। हिन्दू समाज के लोग इनको भगवान मानकर भक्ति तथा पूजा करते हैं। राम–मंदिर अनेक बने हैं।

हिन्दुओं के जीवन में, अन्य अनेक संप्रदायों की प्रभुता के बावजूद राम का नाम प्राण बनकर बैठा है। राम शब्द आज सदाचरण का प्रतीक बन गया है। जैसे रावण शब्द दुराचरण का प्रतीक। वैष्णवों में राम की पूजा ही प्रधान है। राम के चरित्र पर संस्कृत और अनेक प्रान्तीय भाषाओं में काव्य लिखे गए जिनमें हिन्दी में गोसाई तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस अप्रतिम हैं। जिस स्मार्त धर्म को राम के आदर्श जीवन से प्रामाण्य किया, उसका वाल्मीकि से भी बढ़कर इस कृति में विन्यास हुआ है। इस प्रकार हम देख सकते है कि धार्मिक विविद्यतायें भारत के साहित्य को समृद्ध बनाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. अलिखित गीत।
2. उपाध्याय, भगवत शरण, भारतीय व्यक्ति कोष।
3. उलिखित अप्रकाशित लोकगीत।
4. सिंह,राजदेव, संतसाहित्य की भूमिका
5. गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरित मानस बालकांड दोहा–30
6. सिंह बाबू महादेव प्रसाद, बिहुला विषहरी।